

DPN 6616

Title : चानक्य सार संग्रह / CĀṆAKYA SĀRA SAMGRAHA

Run. No. 7341

Cat. No.

Micro. No.

Subject नीतिशास्त्र

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 8 × 22

Folios 49

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / doñor नुहे सुन्दर तुलधर

Date: NS / SS / VS / KS 884

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : copied in Kantipura

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / smoke

Beginning, colophon, post-colophon :

इति चानके सारसंग्रहे तृती (य) शतकं समाप्तमिति ॥

5

0

CMTS.

5

10

15

20



ॐ नमो श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ यत्तमसि न सावद्वेने लाकाधियनियुह भानाभम् ॥
 नवक नाज निमि समया ॥ अधिने वा मिद भर्म् न वा ह्मा भिने ननु भा धर्म उय दे भवि नर्यः
 कार्या कार्य सुत भुर् ॥ २ ॥ ने लाका अधिपनि ह्म वृद्ध नो नम सकाल या वा अ ना ध भम् ॥
 सयि काम नया नाज निमि मूढं न या नाज निमि वरु न ह्मा ॥ ॥ निधय नम न्वा नथ
 भाम् धन लय सयामा व न माम दाहि नया नाथं ध साम् न हि नया यि अ कार्य
 कार्या सि ॥ ॐ अ धर्म अ धर्म सि यि अ उव दे भव न ह्मा ॥

नाथ अकार्य भु न भु रमिय ॥ ॥ तद हं सं प्रव कामि न नाथै हि न कामि
 या ॥ यन प्रव प्रव ह्मा मा न व हि न का विनी ॥ ॥ म न्वा या न हि नया य
 काम ना न कि न ह्मा य ॥ ग म म न्वा य प्रव व न्वा य ध भम् न माम ना हि न
 या नाथं या य ॥ ॥ मूल म्वा य कामि ना न क कु रा धि नं ॥ य न वि ह्मा न मा न न
 सर्व ह्मा न हि जा य न ॥ ॥ मूल म्वा य जि न ह्मा य ह्मा म ना न क रा धि न ह्मा न
 ग म्वा य न्वा य ध भम् सयामा व न न ह्मा वि ह्मा व ह्मा ना न मिय सर्व ह्मा य ॥

15

10

5

मूर्खविद्यापद (नन दुष्पामी रुन (ननन । द्विषतां संयथा (नन पंडिता यवसी दति ।
 ॥ मूर्खक विद्याया न उयद न विडा क दुष्पामी मि सांति यक क गुग्गुला खला
 क क पंडित रुन सां अ व सा न डा नि डा ॥ ॥ गुनिरिः संरु संयकं पंडिते संरु
 संकथः । कुलिरिः संरु मिगलं कृत्वा (नन वसी दति ॥ ॥ संगया यरुलं गुहिक
 कडा षलाय रुलं रुति कडा मिगया यरुलं संरु न कल वक कडा थ (थ या क क
 अ व सा न डा न म दू ॥ ॥ उ म ला तां रु कं ग तां म द्या पा तां व द नी तां । रुी तां ना ज

कला तां व विष्म संति ग ना यूषः ॥ ॥ क्षय डा स र्प डा धन का डा कि सि डा मि सा
 डा ना जा डा धन स विष्म स या न सा आयु डा नि डा ॥ ॥ वे विष्म संरु विष्म संया
 ननः कलू मि क ति । स विक्ता (य व स फ व प ति न गु नि व द्वा त ॥ ॥ ग म क य वूष
 न ग गु डा विष्म स या न डा क य वूष सि मा या स द्वा न डा न सि मा न क ति ग डा द्वा
 न न वा न ध क (थं रु य ॥ ॥ धन भ सा य था ग वू वि द्या सं ग्रु न व व । आ हा न
 य व हा न व ल क ल जा स दा रु व न ॥ ॥ धन द य क व न स वा द्वा द्वा का य गं म

सतवैलस ववहालयायववस धनसलकातालममाल ॥ नगुवसदृ
 सीमाता नगुवसदृसीपिता।यसुनतिमहाधार्वं संसात्रादधिदृष्टवं ॥
 संसालस मासयासितंगुवतडाधद ववयासितंगुव (धस) अधात्रसंसात्रसमूह
 पालयातकिव निर्मलसुनषनकिव धधनगुव (धस) शलं ॥ माता
 गंगसमंतीर्थ पितापूकनमवव।गुवकदासमंतीर्थ मातागंगयूनःपूनः॥
 ॥ ग्वक्तमनूयया मासकूलं गंगकूलं वकूलं यकनतीर्थं गुवकूलं क

दात्रतीर्थं मासकू कागंगडाडर्थं ॥ विद्यानूपसै नूपातां कुमानूयंत
 पन्थीनी। काकिलातांस्वर्नूपं नात्रीनूपं पतिवताः ॥ कनूयया नूपकूलं
 विद्या नपन्थीया नूपकूलं कुमा काकिलया नूपकूलं स्वर्न स्त्रीया नूपकूलं पतिव
 वनयाय ॥ नवविद्यासभावंधुः नववाधिसमात्रियुः। नवाययः समंस्त्र
 हा नवदेवायवंवलं ॥ पासाकूलं विद्याडाडुल्यमदू गगुनलं वाधिडा
 डुल्यमदू स्तिरुशलं काय क्कायडाडुल्यमदू दवलसुया देववलशलं ॥

॥ ॥ विद्यापवातिनामिर्जं, कार्यामिर्जं गृहपूत्र। आहलत्याषधमिर्जं ध
र्ममिर्जं पत्रपूत्र ॥ ॥ पत्रदशयामिर्जं शूलं विद्या, कृयामिर्जं शूलं क
लात, प्रागयामिर्जं शूलं डाषधा, पत्रलाकयामिर्जं शूलं धर्मः ॥ ॥
इन्द्राधनाविषं विद्या, अजीर्णं शूलं विषं विषं (गमिषिदत्रिदस्य वृद्धस्य त
वृहीविषं ॥ ॥ ताकाल अस्यासमयागदाडा, स्याविद्याविषशत्रु अजि
रुशत्रुदाडानया अन्नविषशत्रु, तासनशूलताडा (गमिषि सं विषशत्रु, काथ

शूलताडा लासक नात विषशत्रु ॥ ॥ अनात्यामो रता विद्या नित्य दा सहता
मिः यः कृवीयति रुतं कर्तुं, रुत्यादाषदता नृपः ॥ ॥ अस्यासमयागदाडा वि
द्यादुर्गं, क्रिथं हासयाक मुदी हालशूलं, मरिं पूसा पित नाडा वृहालशत्रुं, मैत्रि
मरिदात नाजादुर्गं ॥ ॥ यस्यापूना न विद्यां ता, नसूना नवपविभः ॥ अंधः
कालं कूलं तस्या, नष्टयुद्ध वसव्वी ॥ ॥ (गमिषि पूत्रपया काय, गमिषि मस
न नाडा, धूत्रमशूलताडा, स्त्रिनिमशूलताडा, धुक्रया कूलवृद्धतामदू, वाथं

विदुसं जगत् ॥ ॥ सर्वनीये दोषा वरुः परातत्र विदीपकः ॥ ॥ लाक दीपका
 धर्मः सूर्यं कूल दीपकः ॥ ॥ रात्रिया मत इलं वरु मा दिनया मत इलं
 सूर्या गे लाक या मत इलं धर्म कूल या मत इलं सूर्य कायः ॥ ॥ जगत्
 वापत ताव यम् विद्या प्रयच्छति ॥ अं नदा ता रय दा ता पय न पित व स्मृ ताः ॥
 ॥ थडा ज न विडा क्क थ म प्र तिया ल या क क्क थ म विद्या स द क्क अं न विडा क्क
 व न दा त विडा क्क थ दा क्क व वृक्ष य ॥ ॥ गु वृ पत्नीः राज पत्नी मित्र पत्नीः

२ थडा साम x
 तथे वय । पत्नी माता स्व माता पं वे ता मा त व स्मृ ताः ॥ ॥ गु वृ या म्नी राजा
 या म्नी ला व या म्नी थडा म्नी या मा म थ दा क्क मा म प्र य ॥ ॥ लाल स्यं व व
 र्वा लि द ग य र्वा लि ता द य न् । स्या क्क वा उ ग व र्वा य न् मि ग्गं स मा व न् ॥ ॥
 (म क्क म नू य या का य दा द गु ता सू र व न दू य जि द १० द न ता डा हों यं ना व य या य
 जि द १३ द न ता डा व व का य डा मि ग्ग ल ल य माल ॥ ॥ नू वि व र्वा स या
 स्या ता यि ह य किं य या य न् । ता वृ स य दि न स्या ता यि ह य किं य या ज न ॥ ॥

[illegible]

पंताः रुदन्ति खनूयुजिगा ॥ ॥ १ ॥ गमकमनूयुजिनिमनकायमवाजाजयध
रुतवृद्धिनीति, भमस, रुतवृद्धिदतनाडा, भमस, नीमितलनाडा, सप्तसलोक
नंयुजायाय ॥ ॥ २ ॥ यणकमात्रस्यकाय (भरात्रवारुकः) पंथतः पूजिगा ना
जा, पथयुगदिनदिन ॥ ॥ ३ ॥ यातकमवितथजाकायरा, हयुग, भमस, दक्षिण
क्रिथ, जूलासिइयमन, भमस, सप्तमन, भमस, सत्रनाडा, राजानंयुजाया, मान्याया
य ॥ ॥ ४ ॥ गु (६) वृक्रियतायलकिंमागार्थः प्रयाजर्त। विक्रियकनद्यभूतिः गमवः

पंताः रुदन्ति खनूयुजिगा ॥ ॥ १ ॥ गमकमनूयुजिनिमनकायमवाजाजयध
रुतवृद्धिनीति, भमस, रुतवृद्धिदतनाडा, भमस, नीमितलनाडा, सप्तसलोक
नंयुजायाय ॥ ॥ २ ॥ यणकमात्रस्यकाय (भरात्रवारुकः) पंथतः पूजिगा ना
जा, पथयुगदिनदिन ॥ ॥ ३ ॥ यातकमवितथजाकायरा, हयुग, भमस, दक्षिण
क्रिथ, जूलासिइयमन, भमस, सप्तमन, भमस, सत्रनाडा, राजानंयुजाया, मान्याया
य ॥ ॥ ४ ॥ गु (६) वृक्रियतायलकिंमागार्थः प्रयाजर्त। विक्रियकनद्यभूतिः गमवः

क्रीत्रविवर्जिताः॥

॥गुणसयकसयत्तयादूत गुणमदूक्त दूययादूत सिद्धव
सुत तिसानतियाडाकृ य गथेभा नसा दूदूक्यायमदूक्त सा द्यं न काषायकान
सिद्ध तिसान तियंकुत असाहा कं मूलमडाद (थासाथं) ॥

॥नवस्या रलतं न

यं त्रयस्या रवर्ण गुण गुणस्या रवर्ण सुतं सुतस्या रवर्ण क्रमा ॥

॥मयूषाया आ

रवर्ण श्रवं नूय नूया आ रवर्ण श्रवं गुण गुणया आ रवर्ण श्रवं सुत सुतया आ रव
र्ण श्रवं क्रमा ॥

॥गुणपृष्ठ सिमा नूयं नीलपृष्ठ सिमा कूलं ॥सिद्धिपृष्ठ सिमा

विद्या लागपृष्ठ सिमा धनं ॥

॥नूयमवत नूय गुणयदूत कूलमवत नूय गुण

लयदूत विद्याया सिद्धियदूत धनदूत लाग दान यादूत ॥

॥अगुण

स्यरुतं नूयं अभा नस्यरुतं कूलं असिद्धिगुणं विद्या अलागस्यरुतं धनं ॥

गुणमदूत नाडा नूय राल श्रवं नीलम रिन दाडा कूल राल श्रवं असिद्धि राल दा

डा विद्या राल श्रवं दान नूय क मया न दाडा धन राल श्रवं ॥

॥गुणरूपाय न

नूयं नीलरूपाय न कूलं सिद्धिरूपाय न विद्या लागरूपाय न धनं ॥

२॥श्रीशिवानन्द

नृपया आरुवधरुलंगुल कुलया आरुवधरुलंगुल विद्याया आरुवधरुलसि
 द्विधनया आरुवधरुलंगुल दानरुक वय ॥ ॥ केसेलया ऊय कंन्या पुनविः
 आसूया ऊयम् । वासतया ऊय वृम् मिश्रधर्मसूया ऊयम् ॥ ॥ कन्या ऊऊल
 परिदकूलस पूनया ऊनय विद्यास नृया ऊनय आ पदास मिश्रया नेके यधर्म
 स ॥ ॥ नात्युच्च निषत्रा मर्मा नातिनिम्न वसातले । व्यवसायसहायानां नातिगारे
 सहायि ॥ ॥ उपाययातनाडा सुसूयवर्तताम जायकं डाने जिडा पागलका

हाऊन जिडा सागरस मूदया लयाय जिडा धनमूर्थत नृनिलाकन यत्त उद्यमया
 यमाल ॥ ॥ ॥ कनयतदधुन पादनका कनयवा । अर्धदिवसं कया दाना
 धनकर्मसू ॥ ॥ क्रिद्विद्वि या अस्यासयातनाडा ॥ ककुपुनंगम कवापुन
 गमक पदास विवातंगमक सदातरुका अस्यासयायमाल दानवियं कर्मयायंध
 ॥ ॥ याऊनानां सहस्रानि वज्रया निषीलिका । अगच्छेनमया पिपदमकं नग
 ति ॥ ॥ आसमवसेडानसा सया निंदाल १००० याऊन डाने क् मया सया दानः

गनु उर्थि हला सां पनाय पना जतं मरु गनु उ सयानित लिहि दा ज डान अर्या स
 या दा ज ॥ ॥ गने न र्थः गने विद्याः गने पर्वत न मा नृदा । गने धर्म मधु काम ध व्यायाम
 ध गनेः गनेः ॥ ॥ धन दय क थ स विद्या धन स पर्वत जाय स धर्म याय स ध
 य ना वृ नू द न याय माल आ स वृ य म न ड ॥ ॥ गु न गु ध म या विद्या पृ क न ध
 न न वा । अ ध वा विद्या विद्यां वृ ध नाय ल य न ॥ ॥ विद्या लाय रु लं ध य ना
 ४ न गु द न कू कू ध ल सा गु न या क द न पृ क ल ती र्थ स पृ ध या दा रु ल न अ ध वा

धन विद्या न अ ध वा विद्यां विद्या हिल ध य ना न विद्या लाय जिलं ॥ ॥ न का क न य
 दा ना न या गु न ध रि म ध ना धन जी ती ग न ग ला वा गु ल ध य जाय न ॥ ॥ अ ध
 ल अ क न स द कं गु न ध य गु न निंदा या क द न १०० वि ज म वि वा रु यि ड ध न
 लि यां ज ल रु या ड ज म को यि ड ॥ ॥ पृ क कः पृ थ या धा ना ना धा नं गु न सं ति धो न
 सा रं न स रा म ध जाल ग रं व म्पि य ॥ ॥ गु न या क म स र्थ पृ थि स सा या स दा
 विद्या सा रा म ला क ग थ ध ल सा ल ड न या डू क म्प वा र्थ सा रा म ला क ॥ ॥ नि

यथाजनं॥

॥विद्याशूलं नाम अतिमशुभं समुद्रया लयात्तालनामवाहाय
यिडा समुद्रया त्रधूनकाडाधनामकूयाय विद्यासदां वा हां याक॥ ॥गुह्य

वृक्षयुक्तं पितृवंशं निवर्धकः वासुदेवं नमस्यंति वसुदेवं नमज्जना॥

सकलधर्मसंगुणपूजायानं ववकाय धर्ममदू गंधधर्मपत्ता शाककृत्समस्तला

नयपूजायानं गुणवत्कृत्या न कुरुश्यावव वसुदेवं गुणवत्कृत्या न सुनानं य
जामयाक॥ ॥गुह्यः कूर्चकिदू नत्वं दू नपि वसतां सतां कंगधर्माद्याय स्वयंगुरु

॥तकी॥

किमप्यदाः॥

॥गुणवत्कृत्या साधूजनं ताया लक्ष्मिनां अया धर्मसुखानि
अ गंधधर्मलसा कतकिस्वानताया लक्ष्मिनां उमनन स्वातया ननुनया नथ
अ धर्ममर्त अ नम्रं धर्मं अ यिडा॥ ॥विद्यालं वनृपलं वन हि तुल्या पलाक

मः सादधनपूजिता राजा विद्यासर्ववृक्षयुक्तं॥ ॥राजा अ विद्या अ तुल्या मरुः

अ गंधधर्मपत्ता राजा हलसा धडा दधनपूजायाय पनदधनपूजा मयाक विद्याः

धर्मसुखानं समस्तला कर्तपूजायाय॥ ॥एकतापिसूयुते विद्यायुक्तं नसा

१५
 पनासंका कालसयातसा कृकृशय तलसायाधिरुय मिथूनयातमा कृप
 वकायवय कलउायकलसो लकीमदय भममुधानसो जायकृयशय ॥
 वदवदांगतल कृ जयहामयेनायनः अलिवादिपत्रानिह्य एवना कृः पनादि
 तः ॥ ॥ गमक वाक्य वदवदांग तल जयहाममम सिडाक आनिः
 वादिविडाक थधिंन वाक्यतना जायायूनाहितयाय जा ॥ ॥ पनादि
 १०
 एममहीपाल कृडकम विवर्जितः विपलिवय विहागि समंदः खंसंसखी ॥

॥ ॥ हानिकामल कृडववनम झाक विपलिवनसत्यागाशुआ सु
 खदः खडतिषद थधिंन जायाय जा ॥ ॥ कुलगीलगुल्लयनः
 सत्यधर्मपनायनः पवीनः पशस्त्रदक्षा राजाधक्षा विधायन ॥ ॥
 कुलवन गीलवन गुलवन सत्यवन धर्मिक वरुन विवर्जितः
 माडाक थधिंन राजायायमाल ॥ ॥ कुनवसनितल व अपगरेम
 दाऊव आतायवायकल व नाधिपत्यनिजाययत ॥ ॥ नकोमेलिव

सति लारु जूहति कार्यायायमहाया (थं) आयमासास्यं वच्चयाक थथि
 कृताजायायममंडा ॥ ॥ मूलवृद्धिदिनाधनः सर्वत्रलपनीक कः ॥ गु
 विष्णववसा। याच धर्मा विधायायत ॥ ॥ कृकार्यश्वसां डाकाया
 सभितयाक समवत्तयायविक्रायायसडा गुविष्णवहालरिद थथिं कृध
 मिक्कधाय ॥ ॥ आयुर्वदकनायासः सर्वरूः प्रियदर्शनः। आयुर्भाल
 गुल्लपनः ॥ षवदेशाविधायन ॥ ॥ कृपादूआदिनवशेषममु आयुसः

याक नादिश्वद विकिसिडा लोकडा रुडा भालसातावरिद गुल्लवक सकता
 सिडा धर्मा वेशयाय ॥ ॥ विहविनामहादकः भामु क्षमिसिवायकः ॥ गु
 विष्णकथिन ध्ववसूपकावः यवस्यत ॥ ॥ ववू अर्जा निम्यविचकृद
 भामुसडा यावरिद गुवि कथिनमशडा थथिं कृमवालयाय ॥ ॥ स
 किदूका गृहीता (थः) लघुहस्तागिताकनः सर्वभामुसमा लाकी ॥ षलष
 कडयत ॥ ॥ कृपालक्षामुनूं अर्थसिडा ननार्तवायसडा समस्तं अरुः

५
 १०
 नया रुद सडा, नाता भामु सडा, अर्या स याक, थथिं क ल ष क भय ॥ ॥
 ॐ मिता का त त ल व ल वा न्यि य द नः । अय मादि स दा द रुः पु नी हा व
 स ड च त ॥ ॥ कार्य या भू त सा त सि व त ल ला क व ल वे क ला क ड ना क
 पु मादि स ड उ वि व रु न थ थिं क य ति हा व भय ॥ ॥ स म स रु क त भ मु रुः
 या धि त भू ति ना ध मः । धे य सो र्य गु ष भ य तः स ना भू का वि धा य न ॥ ॥
 स म भामु स ड उ य धि त वि व रु न ॐ न्द्रि य कि त य या य रू धा र्य व रु भू न

५
 १०
 वी ल थ थिं क म क्री या य ॥ ॥ स म स रु द य भ मु रु वा रु न भू य ना कि नः
 सो र्य वी र्य गु ष भ य ना अ ष भ भू का वि धा य न ॥ ॥ स म स रु स त या भ मु
 स ड उ वा ल सि ड उ व ग त ड उ भू न वी न गु ति क थ थिं क अ ष भ न भय ॥ ॥
 म भ वि वा क दू पा रुः य न वि ला य ल रु क ष भ ना य थ क वा दी च उ व दू
 ना वि धा य न ॥ ॥ व द्धि द व चं रिं क्क नि य थ र्थ ष ला क म व वा भ या क
 धा र्य व रु थ थिं क दू त क्क य ॥ ॥ या र्थि व स्य च यि य व द मि गु ध ल रु ल ष

यनसंवद्धं न राजा लक्ष्मणलिसुखेव ॥ ॥ राजा अयिनिं वृद्धा क. गु
 धवन् लक्ष्मणला क. लक्ष्मणं राजाया वृद्धिया क. अर्द्धं लक्ष्मणिया य. ॥
 अत एव वृद्धी नानां दया क. वृद्धिं न संयुतं । आदिमध्मावसा न वृद्धी न तया स्यति
 विक्रियां ॥ ॥ कृष्णसंलीनमद् दयाद् आदिमध्मावसा न वृद्धी न तया स्यति
 वृद्धी न निदानद् धर्मेणु क. लक्ष्मण ॥ ॥ पति न वृद्धी न तया स्यति
 क. वृद्धी न तया स्यति ॥ ॥ पति न वृद्धी न तया स्यति ॥ ॥ पति न वृद्धी न तया स्यति ॥

पति न वृद्धी न तया स्यति ॥ ॥ पति न वृद्धी न तया स्यति ॥ ॥ पति न वृद्धी न तया स्यति ॥
 अ. लक्ष्मणलिसुखेव ॥ ॥ राजा अयिनिं वृद्धा क. गु
 धवन् लक्ष्मणला क. लक्ष्मणं राजाया वृद्धिया क. अर्द्धं लक्ष्मणिया य. ॥
 अत एव वृद्धी नानां दया क. वृद्धिं न संयुतं । आदिमध्मावसा न वृद्धी न तया स्यति
 विक्रियां ॥ ॥ कृष्णसंलीनमद् दयाद् आदिमध्मावसा न वृद्धी न तया स्यति
 वृद्धी न निदानद् धर्मेणु क. लक्ष्मण ॥ ॥ पति न वृद्धी न तया स्यति
 क. वृद्धी न तया स्यति ॥ ॥ पति न वृद्धी न तया स्यति ॥ ॥ पति न वृद्धी न तया स्यति ॥

कसतनकवासहयु॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गुणवन्त
निजाशक्तगुणहीनविर्जितं॥ ॥ धर्मनग्ननष्टनाजानधर्मअर्थकामवृ
द्धियायतिमिरुनन्निर्धुगुणिककथाजलयगुणमदूकालत॥ ॥ यत्कि
श्चिन्नूतकार्यं गुरुं वा यदि वा गुरुं तनमदूकनाजासूकनः दूकनत्रयि॥ ॥
गुणवक्तृयाजलयानगुर्यादानं जगुर्यादानं सकृद्योगेदानं दूकनयादा
नं नानायालक्षावृद्धियायु॥ ॥ यथाहमयनीकृतगायतादनवदनेऽवथा

पुत्रसमयावकूलमालनकर्मना॥ ॥ गार्थं नृपलिकायायमिसकृयदाय
नाकधनसायजुधं पुत्रया कूलभासावकर्मयत्रिकायाय॥ ॥ स्त्र
कथयिष्ये गुरुया वांधवायासनागमआपकालनदार्थं रायावविरुवकयं॥
॥ एतन्मनश्चायां वासनसमडायासा आयदांकडावलमदमिगइः खसम
डां मुलक्षीमदूकमीथुत्रिहियाडामालनमाल॥ ॥ वामरायासिता
मूर्त्यः पुत्रकावाकिचात्रकः निस्त्रहावधुवर्गश्चल्यजदस्यमहसुखं॥ ॥

विपरीतमदूक्तम्। सर्वम् कायं विनालमया कस्तुभमदवासा लायि कृया
 कामर्तुमिसा धूलिनालगतं महासूखिरयम् ॥ न कश्चित्कस्यचिन्मिः
 न कस्यैव चिन्मिः। कावक्षदवजायकमिना निविषवस्तथा ॥
 गुणिक्रियां मित्रं हन्ति प्रियरूपकावधनं गुणिक्रियां हन्ति दूरीतं रूपकाव
 नदतनाडा ॥ कायाधिहजतलाकं रुजनिपत्रमार्थतः। वस्तुकीवकुर्या
 दृष्टापवित्यजतिमातर्व ॥ आर्याया अतः सालन लाकं स रुजलेषमाल

गार्थं भालसा यत्रमार्थहर्तं रुजत्रयमाल यत्रमार्थमवगूनालन सा नानदः
 दूता नमयत्रनाडा सा सा गाल रुर्थं तालत ॥ कृतावा सतिना निदा प्र
 ह्यस्य कृतावतिः। कृतः शोखादविडस्य दूरीतस्य कृतावतिः ॥ कि
 नावया हृदमदू अहफक्त यावतिमदू दविडया सुखमदू दूरीतया कृता
 मदू ॥ तस्मिन्वस्तु कृता मान्या दूरीतस्य कृतावतिः। वस्तुमानी कृतः सहा
 कृतः सत्यवका मिता ॥ रव्या कृता मान्या मदू हृदया कदया मदू वस्तुमाक

15
 10
 ॥ सुमदू कासिक या क सत्यमदू ॥ ॥ दूर्ध्वलिख्य वलाना जा वा ना धी नूदि न वलं
 वलमूर्ध्वस्य मोत त्वं जो ना धी म न त्वं वलं ॥ ॥ दूर्ध्वलिख्य वलना जा वालकया
 वलधाय मूर्ध्वया वलना त मवाय ख्या वलरु स व क्ता य ॥ ॥ अनाथना द
 विदनां वा न वृद्धि न य धा नां ॥ अ न्या य प त्रि रु ना नां सर्वेषां पा भि वा गति ॥ ॥
 अनाथ कया द विदया वा न कया क्ता थया न य धा या अ न्या य या सकल या
 गति ना जा ॥ ॥ वा धि न स्या र्थ ही न स्य ण नू वि दा सि त स्य व द्द द य ण क द म्ब

५
 ०
 ॥ सुहृदं न त मो र्ध ॥ ॥ ना गि रु या ड या द ण नू डाल्वा दा ड या द नू ग ल स सा
 क न क ड थ न या ड म धा हि त न या व द दा ड या य ॥ ॥ आ नू व र्धे य स न
 या क इ लि क ण नू वि य रु वा ज द्वा न ण न त वा य सि रु कि स वा न्ध वं ॥ ॥
 दूःख रु ल आ य दा व ल स ण नू डाल्वा य व ल स दू रु क स ना ज द्वा ल स ण न त ड
 नू व ल स थ न स वि वा ल या दा ड या द क्ता पा सा थ ड थ य ॥ ॥ रा व वृ धि
 म नू य ना तां स त वां सर्व क म्ब म्ब रा व न र्ध वि ता का ना रा व न दू हि ता न ना ॥ ॥

मन्त्रायाम् कर्मरुचिं रावनसिद्धिं रुचिं सिय रावनमूनीं वनायाग रावनका
 यन्त्रायाम् वनायाग ॥ न देवा विद्यतकाश्च पाषाणवदहमन्त्रा रावः
 वृत्रिद्यतदवन्तस्मान् रावमहर्हन् ॥ देवता सिमा संमदू नाह संवा सं
 वृकमुक संमदू रावमागुसदवदू धनत रावतडाधन ॥ सिखातांद
 वतावायुं हनमावायुं देवताः देवतायापितां हलावां क्र (भ) जन देवताया
 ॥ सिखाया देवगुनु गुनूयाद हन सिमाया देव पृष लोकया देवडा

क्र ॥ विषयं भयथमिदं नावायुं पृष देवताः पृषा यथयथमातामि
 नं यथयथमसुतः ॥ वाक्कलसायमिधं गुनूसाय देवधं मा मरु रं पृषा
 धं कायरु रं मिहथं ॥ गुनूवनिदि जातितां वं हनं वाक्कल (भ) गुनूशाय
 तिनका गुनूमीर्षं सर्वसायागता गुनूः ॥ वाक्कलया गुनूअग्निदेवता
 वहुवर्कमनूदकायां गुनूवाक्कल मूया देव पृष समसु लोकया देव अया
 गता ॥ डरुमस्यापि वल्ह्यती वापि गुरुमागम। यैजुनियायथन्यायस

15
 चेत्याद्या गता गुत्र ॥ ॥ तडां ज्ञानं कथाकं वृत्तान्तं अज्ञानं कथं अलनाः
 अथैव सद्धाधेय पूजायाय मानं सकृदस्यां अज्ञानं गुत्र ॥ ॥ दत्तनायूज
 यदुक्ता रत्यादातनं पूजयन् ॥ गूढ पूजायका न विद्यानाम शिवन्दनी ॥
 दत्त पूजायां रक्तिरावन संन्य पूजायाय दातनं गूढ पूजायाय उपयात्रधवा
 क्तव पूजायाय नमस्कात्रध ॥ ॥ धर्मस्य मूलं नारुध गायामूलं केवाकः
 लभवाकः धर्मयुक्त्वा कर्मस्य धर्मस्य तातन ॥ ॥ वाजामूलं धर्मं वाकः

यातय मूलं गतवाकः धर्मयुक्त्वा यात अनस तातन धर्मय ॥ ॥ आवायाकः
 लन धर्म आवायाकः लमाकाति आवायाकः लन धर्म आवायाकः लिलकः ॥
 ॥ धर्मरुल वियुङ्गुत्र धर्मरुल वियुक्तं रुल धर्मा वियुक्तं नाहित लकः
 धर्मरुल न कं आवाय ॥ ॥ राधं राजन धर्मा वियुक्तं विलम्बियं विरुवा
 दात धर्मा वियुक्तं नाथस्य यतः रुल ॥ ॥ नय दूया वल राजनय सामर्थ्याव
 लरिदुम्भी अत्रति संपत्तिदूया वल दात वियुक्तं धर्मयुक्तं यत रुल लाय

उद्यम साहस धार्य बल वृद्धि पनाक्रम धर्मता (मन्त्र) या कदंत आत्म भद्रं देवता
 लं वा वा ॥ ॥ सामादातन रुदन कथन वलन व। सर्व कम्पु सहाय मुद्यान
 नीयानवाधियः ॥ ॥ सामादातन रुदन कथन वम्पु मावकं (मन्त्र) ना जान
 धन उपाय यादा उपाय मावक माल ॥ ॥ पाठ त्यागी ग (मन्त्र) ना गा, रा ग्पु य नि
 जनेः सह। मन्त्र वात्र (मन्त्र) या क्षान् यन प के ल कर्त्त ॥ ॥ स्यात्तु धम मया मशय
 उपराग रुक वय ध आ प वि जन नू धन मन्त्र स वा ध रु य सं ग्र म स या ध रु य ध

वागनाजायालक्षणा॥ ॥ इहमपुत्रिपुत्रासदतयाजयन् । नृपमर्थप
 दातन, समुल्लापनाक्रम॥ ॥ इहमपुत्रवजाजनयनमस्कात्रन, धूत्रक
 अजाजनयनरदन, लालीजाजनयदामविय, उल्लापनाजाजनय, वनाकः
 म॥ ॥ आत्मच्छिदपनंदशान्तिश्चाच्छिदपनस्यच । गुरुकर्म००० वागना
 ति, पत्रलावयेरलक्षयन्॥ ॥ धेडाआत्मायात, विशायात, धमनदखनय
 विमनडा, लावशकाभवयाततय, धडादावनयतसां, विक्रवत्रसकायलक्षयि

15
 निविप्रमिश्रवाश्रवा। सरुलजीविर्गन्तस्य आश्वार्थकानजीवति॥ ॥ एतद्
 म्वाकधाय वाक्कलमिश्रं धूतम् अक्कम्वाकधाय सरुलजम् ॥ ॥ एतद्
 निगुल्ययस्य यस्य धर्मस्य जीवति। गुणधर्मविहीनस्य निरुलं गस्य जीवति॥
 ॥ ॥ एतद् गुणधर्मदग् अक्कम्वाकधाय गुणधर्म मद्दम्क जम्भयानिह
 लधाय॥ ॥ वावा सत्रस्य गीयस्य गीयान्पवती सति। लम्का। त्यागवतीप
 10
 स्य सरुलं गस्य जीवति॥ ॥ एतद् याववतस सत्रस्य गीयान् म्मीयपव

गी सुगीश्वरं धनदया अनाश्वरं धक्कम्वाकाया सरुलधाय॥ ॥ ध
 म्माथे काममाका नायस्ये कापितविद्यत। अजागनत्रस्यापि नित्रर्थगस्य जी
 5
 विर्ग॥ ॥ धर्मजुर्थको ममाक धयतासु कृता मदन मद्रुमन एतद् न
 धक्कम्वाकाया नित्रर्थधाय॥ ॥ धर्मस्य विहीनस्य दिव्या नित्रविक्रि
 यं। एतादृका लवर्मुवस्य मवपुजीयत॥ ॥ धर्मस्य मद्रुक्क या जम्भव
 र्थनिदिनरुतधाय तक्कलमियावम्मु (थं) धमनं जीहृश्या अरुय॥ ॥ एतद्

नयिगुल्लेवाया हावावाया गुनानयि।यूकि यूकं ववायमकनवायागुनू (मेन
वान् ॥ ॥ अशुनसांगुल्लमदनमान गुनूशनसांदावनषदनमतडा यूकि
शकादनमाल अशुगुतिशका गुनूशलसांदनमतडा ॥ ॥ अकल्लेवांन
कल्लेवांयालेः कल्लुगनेनयि। कल्लेवाभवकल्लेवांयाल कल्लुगनेनयि ॥ ॥
कथसुपान (थनसां अकल्लेवायायमतडा यायनकाकं ० सुपान (थनसां यायमा
ल ॥ ॥ अशुनिवानकसावसुयह दिमायवनक नि ॥ २०० ॥ अशुसुयागुल्ल

कालवविपुनासंधिः कालवमिह विग्रहं। कार्यकावनमाप्रिय कालं कृप
तिपठित ॥ ॥ कालसुगुडासंधियाय कालसमिहडा लाय कार्यया
हउन कालहनर्यडितन ॥ ॥ कालः पवमिह ता नि कालसहवनयजा
कालसूफषुजागर्हि कावाहिद्वन नि क्रमः ॥ ॥ कावनसमसुपातिदका
पाकडानक् कालनपुजासंहावनशुय कालसदन कालसजागनशुय अर्थि
द कालपुनकमजिडा ॥ ॥ कालाकालाहगंवीजं रुलं कालायवरुता काला

यवरुसंगुष्टि पूतकालापिसंरुनत् ॥

॥ कालसनातापसापिय कालदान

गृष्टिरुयु धनं कालनं भावकिडा ॥

॥ खदिसोरु मिनापध्व यन्दा कानिलमा

नून। सवसंरुनग कालन समा कालमरुन ॥

॥ आकाशदिग्भपृथिविविन्द

सूर्यमिरुस थुनिसमर्म काननकाचकिडा थुनिया कानध कालजुतिगडाधन

॥ ॥ किंकनिक थुनिककाच धनाययनविशत। नग्नरुयनकायम नजकस्यः

किंकयन ॥

॥ कूयाय ह्लादाववनरुदमदननाडा नग्नयादवाहयमसः

विया कूयाय ॥

॥ कदलीवनसः ॥ सुवकिं मन्दपनाक्रमः ॥ अविबकजनः

सुनगुलवान् किंकनिकथामि ॥

॥ कलिलवनसमितयात मितनयमरु वि

वकमदूथसगुलिककया कूययाजन ॥

॥ पलयरिन्नमरुदिरुवकिल

सागला। सागलशदमिचुकि पलययिन सागलाः ॥

॥ पलयसः समुद्रनया

नमयाचकनधर्मधवलपयकल साधुजनशकाया सागनरुदयायमयडा प

लयकालस ॥

॥ मनुवशितकल्यानं मर्जादसागनरुदयायमयडा प

त्वाः तत्र न किं कदाचन ॥ ॥ कल्याणसूक्तं नृवलनयः समुद्रनीसिमाध्वनल
 पूः महापूषशकाविहिदिनालमध्वनलपूः गवतसं ॥ ॥ विद्यकम्भीषूचय
 नाविद्यकवाक्ताक्षगयाः । पात्र्यविद्यकनीवाद्यासाधूषविद्यक ॥ ॥ स्त्री
 याकयंवलदूः वाक्ताक्षयाकतपदूः नावयाकदूः साधूयाकदयादू ॥ ॥ साधू
 समानमात्रनरवकिदहविजिगीडयकावगनापिदूर्जनकनगृह्यग ॥ ॥
 साधूजनयाकसमानयादानथदेडोहलुद्धशङ्कादूर्जनयाकसन् १०० विताडय

कानयागसांसूतानं धडायायमजिडा ॥ ॥ वृधवाधनिभममुनिनावृधम
 मुवाधयन् । पत्यकपिकनदीपः वक्रुहानानपधनि ॥ ॥ कृनिशकाभध
 मुनवाधयायजिडा । अकृनिक्तवाधयायभममूर्नमजिडा । गधधनसा । पत्य
 कृतमनयादतयानं । मिखासदूक्तनमषदर्थ ॥ ॥ नात्रिकलसमाकाला
 दृग्धनकापिसर्जना । अनापिवडलाकालावदिनवमनानमा ॥ ॥ नंका
 वार्थसर्जनशयूपितमसिद्ध । दूनसिद्धकाठ । दूर्जनशयू । वयवसिर्थपिन

१५
 १०
 शिदुदुनमशिदुदु क॥ ॥यन्दनं शातलं च वन्दनं ननु वन्दु मा। वन्दु व
 दनयामधसाधूसम्यक् शातन॥ ॥शाखगु शातल वन्दु मा शातल (धन
 नायासिर्न साधू जननयत्राय सीतल॥ ॥अधममिधमिधु कि यो निमि
 कृत्ति साधवः। उरुमा मानमिधु कि माता हिमदगाधनं॥ ॥अधमत अ
 धमयायू मधमान प्रितियायू उरुम जनन मान्यायू कडा धका सं धनययू
 ॥ ॥मक्रिका वनमिधु कि धनमिधु कि या धिवः। नीवाकनरु मिधु कि ध

५
 ०
 किमिधु कि साधवः॥ ॥शजिनितद्या लङ्कायायू ना जान धनं रूकाया
 यू नीचनल्लाय रूकायायू साधू जननमिधु कि स रूकायायू॥ ॥रूगलवा
 धमिधु कि रूपमिधु कि दानिका। स्तनय कूलमिधु कि स्तनमिधु कि नापः
 सा॥ ॥रूगल जनन दका स धन वां युयायू मिशारुका स रूप वां युयायू
 निशका स कूल वां युयायू नप धिद का स स्तन वां युयायू॥ ॥अतिरू
 गनय द्युयं निला स नय सूरव। पत्रयी जवनि वरुते वसाधू विप्रत॥

॥ अग्निदुःखन धननाय अग्निलारया दनसूखनाय मवपात्राविय धूमि सा
 धूजनयाकमदू ॥ ॥ अग्नक ना रं रा रुः अकार्यनेवकात्रयत् नानाका
 र्यनकूयात्रिनिहू लनेवसवयत् ॥ ॥ ह्येति धनमरुयागु विज्जनं र
 मयाक अकार्यमयाक विकृतिधनकार्ययार्थं अयाग्यनिहू लगु लिमवाम
 याक ॥ ॥ नोनननमानिकर्मभोकि कनगजगज साधवन्तदिसर्वगुव
 दतनवतवत ॥ ॥ पर्वतपतिमानिकमदू किसिधनपतिमृतिमदू सा

१ जननश्रावना

१ जनन २ म
 सकृदिनं साधुमदू गुपतिं धीखंडमदू ॥ ॥ पनकार्यव्यूका सा स्वका
 र्यवृत्तिप्रसाधयत् । सूदनकार्यनिवृत्तिनाजकार्यवृत्तिकमः ॥ ॥ मव
 याकार्यसूगुनिर्धयाय धअकार्यसतकालयाय मिश्रकार्यसहितन
 याय नाजायाकार्यसवलनयाय ॥ ॥ जलनभवनीयानाय कर्ततनदृ
 धन अजलमपिसाधुना सिनात्रयवनिधिति ॥ ॥ नीचयाकया दासवा
 लवयाया धननकुर्तुसियमदू साधूजनयाकया दासवा लाहासयायाथ

॥महतामापदसक्तिमहतामपि संयदा॥००॥ तत्र मृमनूष्य

नायदं नैव संयद ॥

॥ गङ्गाधरयाज्ञापदांशुसंपर्हिंदू विद्यामनूष्यायाज्ञा

यदासिद् संयतिमिद॥

॥ सकृदुद्यत्किञ्चन वन्द्यं तत्र नन्दमा विष्णु

समप्रलमागुनमहताकप्रसंगः॥

॥ महादेवसंयुक्त्याय अर्कपञ्चनव

दुमासुंदर्याय वसु (६) वने विष्णुसुंदर्याय सुमने वा ३१ महापूनुषसुंदर

सूयाय हाथ आज्ञा पाडा ॥

॥ विष्णु कथा थक (वेव यत्रा मयः सुखि न का ॥

सर्ववर्गानि यावत् कथावत्तु यत्पुनः ॥

॥ अ० बलवाक कं पदपूर्कं ॥

मुसद मं, वसुनिमशुडान्त, मूर्खमशुडान्त क्रिया कर्म या कर्म (धनयतिगध
य॥ ॥ बाह्य आद्यक बाह्यिर्वा राहुधवा मया धनः ॥ धनः वा विवर्तितः ॥

य॥ ॥ बाह्याय नुवा निश्चयः अश्वत्थः धनः ध्यानाय त्वानि कूर्चः निःकाण

नाकषिवाहकः॥

॥ वाहनवनिजाल सनवं जाननाजसेवक तथा वनः

अथ नाभान्न नियमनिसनयायू कातनयनिसनरुका कायो कोयू ॥ ॥

11

वज्रं धनार्थिवा निष्कं विद्यार्थि वदूष्माः स्रुक्का नयत्यम्भीनां मानार्थि नृपः

मिं वज्रम् ॥

॥ धनार्थिन वनज व्यापारयायुः विद्याधिन अतगः ॥ मुद नय
गार्थिन अरुका नर म्नीया कडान मा नार्थिन राजाया कडान ॥ ॥ मुखपद्म

पञ्चाकालं वा वागात न च दत्तं । दद क हितैयुर्क विविधं धूत लक्षणं ॥ ॥ क्रू

उप नयति (थै) कामल वचन धा खंड (थै) गानल नूगल कल नि (थै) (थै) सागा धूत
या लक्षण ॥ ॥ इर्जन पीय वा दी च ने न विस्वास का नयत् । मधू वसति जिज्ञास

हृदि हाना हन विषं ॥ ॥ इर्जन इयु एका उल्ला य विष्म स वियु कस्मि मवास

नयु नूगल स हाना हन भया विष (थै) चानिडा ॥

॥ यत्रः स र्मप सागानि यत्र

विज्ञानि यस्याति । आत्माना विल्ल सागानि पध्न कथित यध्न नि ॥ ॥ इर्जन

॥ इर्जन

नम वया दूख न भूयु का पाय धर्ष न धडा दूख न रुन सा द्याल पाय पाय धन रु
लसां मन सां मघन किडा ॥ ॥ दर्शनीया ध्या मूर्वा धन व क धनि र्गुणः । दूल

सुप्रिय दृष्ट्य क किं सुका वूव पुष्पिकाः ॥

॥ (ग) क मूर्व नूव न रुका गुणम

धून क मान ययायु ग (थै) धन सा दून स वा कला हा वूखां साया (थै) ॥

२ धन x

मूर्त्तौ विपदि हर्षं यद्युक्तं दिव्यं दापयुः ॥ रिचतवाक् सत्यं नञ् दृष्टं कं० कायं थ
 ॥ ॥ मूर्त्तौ माला माला यद्युक्तं नया तु नित्यं कृतापनु वयन हा हा स कथन
 कया अ. पूत मन्त्र वर्थं व्याधा विधिः ॥ ॥ सूर्य कुल मल कुलं सूर्य कुल मलः
 खलं मन्त्रा वधिवन सूर्य मल कना यन्मया ॥ ॥ सूर्य जिक दूर्जन जिक स
 र्प्या सिनं दूर्जन जिक गेध धन सा मन्त्रा वधिवन सूर्य वन या यजिडा दूर्जन
 दूर्जन मया या यम जिडा ॥ ॥ हस्ति हस्त स हस्त न भन हस्त न वा जिना भृगिनाः

दन हस्त न दन हस्त गन दूर्जनः ॥ ॥ कि सिडा दा न चि १००० कृपा न क माल स
 लडा सन चि १०० कृपा न माल दद द्वाडा १० जि कृपा न क माल दूर्जन डा दन हस्त
 न या य माल थर्थं नित्ति निवा न न रु यडा ॥ ॥ हस्ति तां कृग हस्त न क डि हस्त
 न वा जिना भृगिना गुठ हस्त न ख न हस्त न दूर्जन ॥ ॥ कि सिडा जू कृग जान
 सन डा वा य जान दद द्वाडा लाल जान दूर्जन द्वाडा लाल ख न जान ॥ ॥
 दूर्जन पति हर्षं यन्मया नालं कना यदि मनिता लं कना सूर्य कि मया पिरयं कन

॥ ॥ दुर्जनशुक्लमाला भक्तसलसां महिनशुभनयंयातसां ॥ धर्मसर्वस्यंक
 लमशुडाला धूमिनमालनमाला ॥ ॥ याजायाविषयनधनयनंयायथाह
 नानिधुवनकीनकीनानिधुवनविषयं ॥ ॥ याजुयाविषयनद्यादांमानद्यास
 नकानंदद्वयसायादूतानसां वियाकनविषयय ॥ ॥ कूडगुमितिमला
 नायकनकदायनाकालदुर्जनमायाकिरुहसुं वक्रिवीजवन ॥ ॥ विद्यागुलात्र
 पंजापानयमगडा ॥ भवतसंदुर्जनवल्लाननासंवासकासेमितया ॥ धननरुनेवा

सुंअनिडा ॥ ॥ पश्चिककलदायाजुनी निचुं कृषिगलाधननं काननववा
 उचकृकस्याकविनेयन ॥ ॥ पुनता ५० दावनयात्रया ५० वयनासिय
 मिषायाकं १०० विगादावन कान पलयाक धूसियाजुन मद्रदावन
 उलिधूलिधक ॥ ॥ सुनकूटदूनायात्रिमिगुहसपत्रितजन् विष्मसास
 मयकालविनागसूपगकृकि ॥ ॥ धनमद्रक कयनिदूलायालिडा मिग
 लहनात्रनमाल सुनधनसा विष्मसयागनाडाकार्यनासुयिडा ॥ ॥

मृदूतवहति मृदू मृदूनाहति दात्रा नसा मृदूना किं विनू नसा हिर्यतना
 मृदू ॥ ॥ नायूडां काउभाचकिडा नायूडां कां माचकिडा नायूडां साधनव
 मजिडा विक्कधं धनननायूडा कसिनं ककभय ॥ ॥ वनयकालिभावद्रिः
 दहमूलानिवरुति । समूलमूलं लया किं ज्वा (मृदू) गलं ॥ ॥ गुद्यास
 मितयानगुसिमाननरुका नद गललकडालना डालनवं भावकदू ॥ ॥
 सूलनामपनिवर्द्धकयावदूरा विती डवलनीकतानिदूननं पनिवर्जयन् ॥

॥ सतडापुष्पासाधवा मिसा ग्मययकादू धूमियानसं मा लतमाल ॥ ॥
 नहस्यश्वयेनुन्यं यनदायासूकलर्न । कनहयकतीवेवदूननपनिवर्जयन् ॥
 ॥ गुकषयिषुक्क श्वक्काकक्क मवयादावनक्काकक्क लायकुयडाक्क धूनि
 यानसं मा नतमान ॥ ॥ असावानं गजमरुं गवं येवयसूतिका गथकपूल
 वासीवदूननं पनिवर्जयन् ॥ ॥ ढाय मरुकुडा किं सि नकवसा सिंधुथानम
 रिदमिसा धूमियाननं मा नतमान ॥ ॥ इर्जनं वसदा मिगं यनस्वामिनगाध

मिथ्या। (मजीर्णं वस्तु जीर्णं च दूतं तयत्रिवर्जयत् ॥ ॥ इर्जनवर्जमिथुः पत्र

पत्रमया कर्मनडा मिथ्या, जिथिसा, जीर्णं रुडा वस्तु थितियाननं तात्र न माल ॥

॥ न विष्णुसदमिथुस्य मिथुस्यापि विषयतः। कदाचित् कृपितमिथुः। सर्वगु
र्क्यकाशयत् ॥ ॥ गुत्रिचिन्तनं वैत्रिजं विष्णुसमगडा मिथुजं विष्णुसमगडा

कदाचित् मिथुसमया लनाडा, गुफमसमसं प्रकाशयत् ॥ ॥ न विष्णुसद

विष्णुस विष्णुसनेव विष्णुसात्। विष्णुसाहयमूत्यनामूलनेव नि किं न मि ॥ ॥

अविष्णुसिद्धा विष्णुसमगडा विष्णुसिद्धा मगडा विष्णुसयादा कया कन
रयदयिडा, हानं चं ता क धन ॥ ॥ नदीनां च नखीनां च गृणिनां शक्रपाणिनां

स्त्रीनां च न विष्णुसयत् ॥ ॥ अस्ति नृसिना कक, शक्रादरुडा क, स्त्री नाजा

थुनिडा विष्णुसमगडा ॥ ॥ नदीनी लघूया वक्राया वक्रं न्याति नाश्रया। सामंता

वदिता ना जानरुक्ति विनायूष ॥ ॥ अस्ति सिद्धा वडा सिमा अक्षत्रमदृक् मि

सामक्तिमदूना जाधसा नाता मयमदू ॥ ॥ यदीकृत्सा सुतं यी नि नि नि न जन

कानयन्। यन्मर्थस्य यागवेपनाकदावदर्शने॥

॥ श्रीनिगारुयकयवसाह

लमलाय धनवावहानमयाय पत्रम्भीमसाय (धसागामालनमाल॥

नगकन्दूकविष्मसंतकूर्यान्मनविग्रह। आत्मनापितथकाठमिजवेविनने
कोयन्॥

॥ इष्टाविष्मसमगडा तडाविग्रहमगडा मिष्टावेविनयसम
गडा॥

॥ कृतयमकिनाजानांविषयविषविषमि। वृत्तहीनकेसुन्यासितसः
वक्तिसदावृधेः॥

॥ कृतीनितवल्लयूमकिनाजा सुदिनीनडागिनीदूवा

कृतवृत्तहीनसुन्यासि धूनिहूनिहूतसवत्रधमगडा॥

॥ कूमकिनासि

विष्मसंकुरायाकृतात्रनि। कृनायोनसिस्वर्णिक्कदवावनासिनीति॥

॥ ॥ कूमकिनाकविष्मसमदू कूमियाकनमिमदू कृनायससुवर्णिमदू
कदगसुनीतिमदू॥

॥ नासिस्वर्णसदायोननाशोचविषविषमिः। मद्यपा

सूक्तनौतंसि युगकालययंतहि॥

॥ व्याकसत्यमदू सुदिनियायनूष
वाकृतयाकगुविमदू धृताडा इवाल्याकसूक्तमदू॥

॥ होविपो

विष्णुमन्त्रियेदं पत्न्या गुत्रुणि कथाः अकननेव गकं यं ह प्रस्य वरं स्य च ॥
 ॥ वाक्कलनिष्कस अंगन म्मीयूत्रयया अंगन स गुत्रुणि कथा अंगन स
 शोमहादव धूसा अंगन स धूमि अंगन तडा तमतडा ॥ ॥ लाक जा जारय
 राजाद किन त्याग सिन गार्था ॥ पंचयन विद्य कवन कूर्या ननु संगति ॥ ॥ ला
 क जा गो सरय विडा न जातु डाल्या गा धदा ना गव थ य स म द नं थ थ य स ना य ना
 य मतडा ॥ ॥ नां जनं गुक ता जा कि न वे क ल्य व दू धु नं न ना नी था न वृद्धि स्या

नमूखो सक्तं वदन् ॥ ॥ अंजल ता यिक म जि डा वि क न ला व न अ दिक र व मः
 रुद मि सा या क था न वृद्धि म द मू र्व या क रं सक्त ग ला षा म द ॥ ॥ ली न (ग वाः
 अग्नि (ग वाः वा प्रि (ग वाः स थे व च ॥ पुन व द्ध य न य स्मा न् न स्मा न् (ग र्भ न का न य
 नू ॥ ॥ ली न (ग वाः अग्नि (ग वाः न य (ग वाः ध न या (ग वाः न य म न डा (ग वाः स न
 ॥ ॥ उ र्व ग क व रु क्कं इ इ स म द य न म्मी य ॥ नि दा मे थू न मा न स्य स वा न नः
 हि य व द्ध नं ॥ ॥ रु ता स क व रु वा स ग न य न म्मी इ न आ न स्य म

५
 थूत थूत्रि सवत्र पानवर्द्धि रूयुडा ॥ ॥ यत्र दाना यत्र स्त्रवं यत्र निवा दं यत्र
 स्यवा यत्रि हासं गु वृच्छ न दूत्र न यत्रि वज्र यत्र ॥ ॥ यत्र म्नी यत्र धन यत्र
 वस्तु यत्र हास याय थूत्रि गु वृया कद दानं यौ तो लं ता न त मा ल ॥ ॥ य
 क कार्य ह कार्प क पीय वा दि नं । वज्र य त मा दृ णं मि गुं वि ष कं र य या मूर
 ॥ ॥ म व या का र्य मा व कू ष द्वा ङ य को ष क्ता क थ र्थि क्ता मि गुं ता ल न
 १० मा त्र न स थ दा द न स दू द न या (थी) ॥ ॥ कू द र्ण व कू वृ लिं व कू रा या वि

नदी स्तथा कू द वां व कू रा र्छं व वज्र य त् प णि न स दाः ॥ ॥ म रिं गु द ण कू द
 रिं था व स कू रा या कू न दी म रिं गु द वा म रिं जूं न थूत्रि प णि न त स दां ता न
 मा ल ॥ ॥ उ र्व सी य दि नू प न रं रा ष्ट्रे व वि ला रु मा । (म पा नी म को ने रु ध
 वज्र नी या य त्र म्नी यः ॥ ॥ उ र्व सी रं रा शि ना रु मा । (म पा नी म न का थ पा न
 जू प्ता ना डा उ ति नू प र न सां य त्र म्नी र न ता डा ता ल न मा ल ॥ ॥ य षू का र्य षू
 वि षू षू ग त त पि रु ला द य । वि प लि षू म हा दा न य त्रि व ज्र वि व कू लः ॥ ॥

१५
 १०
 गमकनकार्यरदयान गकनरुलदगसां विपरिसु महादानयानसां (थाकवे
 विकलभावनमाला॥ ॥रकांरकसमंयस्य कार्यकार्यविदुल्याता।सदाकार्यव
 संधरा रतवांसर्वदावृद्धेः॥ ॥रकांरकसायाजकार्यजकार्यकुल्यायाय
 सदांकार्यसु स्थाय जाग्य सुनि लाकना॥ ॥रतवामकुलीनानांराजापरापरी
 विनि।रतवांसुतनगुतांकलापूर्वापकारिण॥ ॥अकूलजं,राजाजं,म
 वयाजिडा नसवाहं पूर्ववेविजं गायमाला॥ ॥यादयानां रयं वानययानां

२२४५५

निनिनारयं।पर्वतानांरयंवडाजंरुनांदिपदारयं॥ ॥सिमायारयरुसुप
 नयारयविकु काल पर्वतयारयमलक् जंरुयांमनूष्या॥ ॥मातायदिवि
 मंदद्याहिताविक्रीयमसुर्न।राजाकनामियानायंकाभिशानारविशानि॥ ॥
 कदाचित्तमामतएसविनताकास्यं,ववूनकामिननास्यं,राजानजुन्याययानना
 स्यं,धवनेसजिनमलपसूदय॥ ॥यत्रराजास्यंकोनःसमन्निवयूनादि
 तः।गजांरुकिंकविशामियतात्रकाततास्यं॥ ॥गनदगसुवाजाधमंभूश

नः प्राकृत्यमानः स्वकर्मरिः। यायनेवमनूच्यातां वृद्धिकर्मान् सावित्री॥

॥ ह्यनेमनूच्याय जयय ध्याकर्मनय्या (धमजमगक कर्मयावि
जवृद्धिरय॥ ॥ रुमयारुषर्षदानं पत्यकलुस्यरुषर्ष। धूमवरुषर्षकलुस्य

रुषर्षकिंयथाजनं॥ ॥ लाहानयाति सादान कं० याति सासह्य क्रमयाति
साधर्म्यधनं ति साजक ति या जययथाजन॥ ॥ चत्रिगुरुषर्षमीतां दुमानां प
यारुषर्ष। सूरकिरुषर्षीपसापगीतां रुषर्षकपाः॥ ॥ म्मीयाति सासूचत्रिगुरु

य सिमा याति सासूचानहाय मिजनयाति सासूचरि नयान् राजा याति सा दयादय
॥ ॥ नक्रगुरुषर्षचक्षानानीर्षरुषर्षयतिः। पथीरुषर्षराजा गीलसर्वगुरुष
र्ष॥ ॥ नक्रगुरुषर्षकालवन्दमा। म्मीयागुरुषर्षकालसूचि पथिवियागुरुषर्षकाल
राजासमसूयागुरुषर्षकालसूचालरुष॥ ॥ सदतापत्रिगुरुषर्षननीयामानम
रुमं। कंसाविद्यादद्यानकालियस्य विरुषर्ष॥ ॥ तडाधदनजमानयानसां
रिह नीवनमानयानसां सतिह गथधनसाकुरुनयात्रिनयनकारं कालि

नागयास्वराशुलं॥ ॥गुविहमीगननायंगुविनात्रीपगितुताःगुविक्रमाकना
जासंगाभावाकःगुवि॥ ॥रुमिनडाअलंमगुविमिसायापगितुताःगुवि
कगुविनागाकमादकगुवि,सुंदुषुअकवाकगुवि॥ ॥गुविहमीग
ननायंगुवल्लभातविशत।लषस्कारनंपत्रियकअन्यत्तनंगुविःगुवि॥ ॥
वसुमंडलयायालंमगुवि,योयाथयनगालताअमलयाद,सुचिनंसुचिध
या॥ ॥रुसंतगुद्वानकासगासुमासुतगुद्वान।नरुसागुद्वाननानीतदि

वगनगुद्वान॥ ॥नलितव्यातकंसगुवि,पादूनव्यातसिजलगुद्व,मा
सिकरुअमिसागुवि,षुसिवगतद्वानकगुवि॥ ॥विदुनरुयनंदयान
मागुमरुत्तुखंदयान।लषुवात्तुसंदयान्त्वयभवकषिंबजत॥ ॥वव
याननानाजुनपुत्रविय,मामयाननानाजुनविय,सायातथमडाडतिविय,थ
मथथमंकायाकागडान॥ ॥कथिलाकीनयानत,वाकलीगमननय।
वदाकनविवातनयस्यसुदननकंबुजत॥ ॥सियूसायादुतादाववक

नीयसंगयादानं वदाकृतविद्यादानं ॥ धनसूदननकवनिडा ॥ ॥
 सुदीहस्तनयाहकं मासमकं निवक्तुं जीवमात्राहं वदुः मृतः धनप्रजा
 यत ॥ ॥ सुदीप्तीयात्राहं नवदिगादिथं नवक्षमां सुदशुलसिगना
 अविवाशय ॥ ॥ सुतहीनाहं यानात्रीधनहीनं तुलाजनां वदुः हीनमलं का
 लं विद्याहीनादिआरुमः ॥ ॥ दूदमदमिसाधनमदराज वस्तुवागवतनः
 निया विद्यामसडावाक्कतितां निया धनिसुल ॥ ॥ सारतसलायवदं

सारतद्विषतादिजः ॥ सारतनयसायकं वलसुत्रस्य सारत ॥ ॥ लवसवाव
 पत्रसार वाक्कलभय्याकनातसारतपन संशकं शनवावसागूत्रक्षयावनसा
 रा ॥ ॥ यस्तु सर्वं विद्यानां मुखानां कवरासवं ॥ पूषासर्वनात्रीनांगवानां
 यस्तु सर्वं ॥ ॥ वाक्कयाडसाहजहयाय मुख्याडसाहकलहयाय मिसा
 याडसाहपूषसायाडसाहनकजाडावावनय ॥ ॥ अग्निहावहलं वदा
 गालवहिरुधुतं ॥ नतिवहिरुलं नानीदरुहकहलंधनं ॥ ॥ वेदसयायाह

15

10

5

15
सुप्रसिद्धायाय, भामि रुद्राया रुद्रा ललितवाम्पुसंगया रुद्रा लपूतदयक ध
नदयकाया रुद्रा लपूतक माय ॥ ॥ अग्निदहति तावत् सूर्यदहति वध्म
या। त्राजादहति दहति नयसा वाक्क (मदहति ॥ ॥ मिदहत्र पिडा तावत्
सूर्यदहत्र पिडा तज्जन् त्राजा नदहत्र पिवतें दंत न्वाक्क दहत्र पिवतयत्
॥ ॥ सनसाक मृगक मांसक वधमधि तंदधिः। तर्ज्या दहत्र वधैशुला (म
मांसकृत् ॥ ॥ सनसाक सिक्का त्राहा तितहिया धनिनय, त्राजा नवोवः

य (म मांसतया डा तुल्य ॥ ॥ नदहत्या नम निदद्यात् रुद्रा माता नदह्या तावत्
यसंकाप त्रिह्यजन्तु रुद्रा मांसय धिस्त्रिः ॥ ॥ धमसाय मत्त धमसाय मत्त
डा, धमसाय मत्त डा (म साता तावत् मांल रुद्रा तावत् य धिस्त्रि त्रावत् यत् डा ॥
॥ ॥ नमांसकृत् तर्ज्या वधमधन वधमधन विवृत्ति वधमधन तर्ज्या निवृत्ति रुद्रा
महा रुद्र ॥ ॥ त्रावत् यान् धमा दान् काम सवत् यान् दानमधन दूया निया
साता वध वधमधन धिस्त्रि विवृत्ति यावत् तावत् यान् मांल रुद्रा लाक ॥ ॥ वधम

15 गत्रययन्ताः यादयापथिवीमिमां । नखादन्नापि यामां संकुल्यमतदिद्वद्वा ॥

॥ पिडासुसुडदूडापथा जाजानवानविद्याडाडगिरुलदू (गमकननागावता
अनिलामां सिशुयानथुगिरुलदू ॥ ॥ अग्निवायुमीयामूर्खसूर्यः नाजकू

लानि नित्यमवायवायसस्यः प्राणरुनाविषट् ॥ ॥ मि. लष. म्मी. मूर्ख. सूर्यना

जकून (थमकिथं उपवायनं नानातं प्राणमावकिडा (थमवृत्तानं ॥ ॥ सूकमासं

10 म्प्रियावृद्धिवाताकस्मृत् (धमदधिः प्रगतमेधुनंतिदाः सद्यप्राणरुनाविषट् ॥ ॥

सूत्रानय. त्रिथिकना. सूथयासूर्यसाय. अंवाधनिनय. सूथमेधुनयाय. कनर
0 आयक. (थमवृत्तानं नानातं प्राणमावकिडा ॥ ॥ सद्यमासं धृतं सद्यवाताम्नी

5 कीनगाजर्त. डकादकं ननु या सद्यप्राणकनाविषट् ॥ ॥ नकस्यादाना. नक

कायाधन. वायकम्मी. आदत. दूदू. जा नय. काकलषन. सिमाकासवान. (थमवृत्ता

न प्राणकलशयू ॥ ॥ अंतादकसुर्गव. पृ. सादकसुर्गवयः। पयसासुर्गव

० ॥ मांसांसांसादकसुर्गव ॥ ॥ अंतयायादतमधियागुल. मधियायादत

इदयागुह इदयाया दनायागुह नायाया दधययागुह ॥ ॥ यंत्रक्रियवि

नष्टक्रिय विनाशुष्टयानत्रः अतिमानिवकामीयगुवृ (धषीरु) धेवत्र ॥

॥ (धका) ना नु वं न ना ण यायू न वि नारि अतिमान्यकां कामी गुवृ (ध
वि धका कन नानं भायू ॥ ॥ (गमरिः) विधेय वदेय महा रिः सत्यवादि रिः

अनु वेदाना लय सफरिः अयन ॥ ॥ सांवा कर्ष वेदं मयं सत्यवादि

अलारि दानं नीलं धका सतान पधि वीधन लयां जगलं ॥ ॥ असां यवि

हिसं सालसात्र मत्तत्रुष्टयं। कानिवासं सगिसं गंगं गमः णमूय जनं ॥ ॥

असां य सं साल सधपना ४ साल रु लं चूच धं वसा कानिवास सत्यवृष सं ग
याय गंगल व धी ३ स्वयं रु पे जायाय धपना सात्र दन ॥ ३०० ॥ ॥ निवानः

कसात्र सं ग्रह रु गी न कं स माय मिनि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गुरु सं वत ८४ वेणव क क दस मि शु क वा व ध क क वा न क सात्र सं ग्रह सं प
रु या हो रु ला ॥ ॥ गुरु म म्मु सर्वदा कालं ॥ ॥ शीका क्रिय निम हान ग

१८०६३५ यामरुते या अतिनिष्ठ्या इ या उ द रि ना वि या ण का या
इ वा उ रं ॥ नारायण

[illegible]